Fuzzy Systems and Soft Computing
ISSN : 1819-4362

बैगा जनजातियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोधार्थी **अंशु प्रीति एक्का** (समाजशास्त्र) हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)
शोध निर्देशक **डॉ राम नरेश टंडन** सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शासकीय नागरिक कल्याण महाविद्यालय नंदिनी नगर अहिवारा दुर्ग (छ. ग.)

सारांश

प्रत्येक समुदाय अपने सदस्यों में स्वास्थ्य के लिए हमेशा चिंतित और प्रयत्नशील रहता है जहां तक बात परंपरागत चिकित्सा एवं योग एवं आधुनिक चिकित्सा के नवीन आयाम से जुड़ी हो। प्रत्येक समाज चाहे वह आदिवासी हो या सामान्य उनकी अपनी अलग तकनीक होती है प्रत्येक समुदाय में रोगों के उपचार हेतु अलग–अलग पद्धतियां अपनाई जाती हैं।

विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा में स्वास्थ्य की स्थिति का अध्ययन एक महत्वपूर्ण तथ्य इन समुदायों का स्वास्थ्यगत पहलुओं का पृथक से अध्ययन अध्ययन आवश्यक है किंतु वर्तमान आधारभूत सर्वेक्षण में विशेष बैगा जनजातियों के स्वास्थ्य के संबंध में सामान्य जानकारियां प्राप्त की गई है।

जनजाति बहुल राज्य छत्तीसगढ़ की 30.6 जनसंख्या जनजातियों की है । राज्य में निवासरत 42 जनजातियों में से 5 जनजातियों को विशेष पिछड़ी जनजातियों की सूची में शामिल किया गया है । बैगा जनजाति भी उन 5 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है । छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की सीमा पर मैकल पर्वतों के घने वन में बैगा निवास करते हैं । ये वही बैगा जनजाति है जिनके अध्ययन के लिए वैरियर एल्विन महोदय प्रसिद्ध हैं । एल्विन ने सहभागी अवलोकन करके बैगा जनजाति पर गहन शोध कार्य किया और दि बैगा नामक पुस्तक की रचना की । जैसा कि विदित है कि प्रत्येक जनजाति की उत्पत्ति संबंधी अनेक कहानियां होती है जिसे वे आनन्द के साथ सुनाते हैं । ये कहानियां स्वयं की सत्यता तो सिद्ध नहीं कर सकती किन्तु इनके माध्यम से उस जनजाति के विषय में अनेक जानकारी प्राप्त होती है । इन कहानियों में बताए गये सिद्धांतों और बातों को जनजातियाँ गम्भीरता से सुनते हैं और जीवन में उतारते हैं । इसी प्रकार बैगा जनजाति की उत्पत्ति की भी अनेंक कहानियां हैं जिनसे उनके इतिहास और वर्तमान में उनके जीवन पद्धति के विषय में जानकारी प्राप्त होती हैं। छत्तीसगढ़ में विभिन्न स्थानों में इनकी उत्पत्ति की अलग अलग कहानियां हैं जो एक दूसरे से भिन्न हैं । किसी एक सर्वमान्य कहानी पर एकमत नहीं है। प्रस्तुत शोध पत्र में बैगाओं से साक्षात्कार के माध्यम से उनकी उत्पत्ति से संबंधित कुछ जानकारियां एकत्र की गई है।

शब्द कुंजी जादू टोना गुनिया या देवार बैगा कुटकी बरुआ देवार।

प्रस्तावना

बैगा जनजाति मध्यप्रांत के जनजातियों में विशेष स्थान रखता है। इस जनजाति के विकास स्तर को देखते हुए छत्तीसगढ़ शासन ने इसे विशेष पिछड़ी जनजाति समूह में रखा है। विशेष पिछड़ी जनजाति होने के कारण बैगा जनजाति को सरकार का संरक्षण प्राप्त है जिसके फलस्वरूप इस जनजाति के लिए अनेक शासकीय योजनाये चलाये जा रहें है। बैगा जनजाति जितनी प्राचीन जनजाति है उतनी ही प्राचीन बैगाओं की संस्कृति भी है।बैगा जनजाति को उनकी आदिम कृषि तकनीक, शिक्षा की खराब स्थिति और जनसंख्या वृद्धि की कमी के कारण भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया है। यह समुदाय असमानताओं का दंश झेलता है, जो उनके खराब पोषण और सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिलक्षित होता है। हमने अध्ययन के लिए गुणात्मक डिजाइन का उपयोग किया है, बैगा जनजाति द्रविड़ समूह की एक आदिम जनजाति है। यह जनजाति भारत की अत्यंत ही प्राचीन जनजातियों में से एक है। बैगा भारत के आठ राज्यों मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, बिहार, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में निवास करते है।1 बैगा जनजाति अपनी अनूठी सामजिक व्यवस्था एवं संस्कृति के लिए जानी जाती है। मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के आदिम जनजाति समूहों में से एक जनजाति बैगा है। बैगा जनजाति जितनी प्राचीन जनजाति है उतनी ही प्राचीन बैगाओं की संस्कृति भी है। बैगा जनजाति अपने संस्कृति को संजोये हुए है। इनका रहन–सहन, खान–पान अत्यंत सादा होता है। बैगा जनजाति के लोग वृक्ष की पूजा करते है तथा बूढ़ा देव एवं दूल्हा देव को अपना देवता मानते है। बैगा झाड़–फूक एवं जादू–टोना में विश्वास करते है। इनकी वेश–भूषा अत्यंत अल्प होती है। बैगा पुरुष मुख्य रूप से एक लंगोट तथा सर पे गमछा बांधते है, वहीं बैगा महिलाएं एक साड़ी तथा पोलखा का प्रयोग करते है। किन्तु वर्तमान समय में

मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले नौजवान युवक शर्ट–पैंट का भी प्रयोग करने लगे है। बैगा जनजाति की महिलाएं आभूषण प्रिय होती हैं। बैगा महिलाएं आभूषण के साथ–साथ गोदना भी गुदवाती है।

स्वस्थ जीवन का एक आवश्यक आयाम है इसके अभाव में मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती इसलिए स्वास्थ्य पर चर्चा एक चुनौती पूर्ण विषय है। स्वास्थ्य सभी समुदाय और क्षेत्र के जीवन का महत्व प्रमुख आधार है और जनजाति समुदाय के लिए इसकी महत्वपूर्णता और बढ़ जाती है।

विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा में स्वास्थ्य की स्थिति का अध्ययन एक महत्वपूर्ण तथ्य इन समुदायों का स्वास्थ्यगत पहलुओं का पृथक से अध्ययन अध्ययन आवश्यक है किंतु वर्तमान आधारभूत सर्वेक्षण में विशेष कृषि जनजातियों के स्वास्थ्य के संबंध में सामान्य जानकारियां प्राप्त की गई है।अधिकांश परिवारों का आहार (पिछले 24 घंटों के दौरान उनकी याद के आधार पर) चावल, कोदो , कुटकी , दाल (फलियां, जो वे या तो खुद उगाते हैं या पीडीएस से खरीदते हैं) शामिल है, जबकि सब्जियां बहुत कम या बिल्कुल नहीं (सामर्थ्य के आधार पर)। उत्तरदाताओं ने बताया कि मांस की खपत पैसे की उपलब्धता पर निर्भर थी। कुछ उत्तरदाताओं ने यह भी बताया कि वे नदी या नाले से मछली, केकड़े और झींगे पकड़ते हैं। किसी भी घर में दूध, दही आदि डेयरी उत्पादों का सेवन नहीं किया गया था। दैनिक आहार में फलों को शामिल करने की सूचना किसी भी घर द्वारा नहीं दी गई थी। वे महुआ या तेंदू (दोनों फलदार पेड़ हैं) जैसे वनोपज का उपभोग करते हैं, लेकिन महुआ के फलों को आमतौर पर स्थानीय मादक पेय (मांड) बनाने के लिए पीसा जाता है तेंदू के पत्तों का उपयोग बीड़ी बनाने के लिए किया जाता है (इन तेंदू के पत्तों के अंदर तंबाकू लपेटकर (सिगरेट के समान)। वे कभी–कभी जंगल से खेड़ा , या चरोटा जैसी हरी पत्तेदार सब्जियां खाते हैं , जो मौसम पर निर्भर होती हैं। यह स्पष्ट है कि बैगा आहार संतुलित नहीं है यह सामर्थ्य द्वारा निर्धारित होता है। इसमें ज्यादातर कार्बोहाइड्रेट, थोड़ा प्रोटीन और उससे भी कम विटामिन होते हैं। गर्भावस्था के दौरान इस तरह के आहार से महिलाओं में विभिन्न प्रकार की कमियां हो सकती हैं और बच्चे के स्वस्थ विकास पर असर पड़ सकता है।

जहाँ तक स्तनपान का सवाल है, दो को छोड़कर अधिकांश उत्तरदाताओं ने बच्चे के जन्म के पहले दिन से ही स्तनपान शुरू कर दिया था। कोलोस्ट्रम में इम्यूनोग्लोबुलिन होता है जो शिशु को प्रतिरक्षा प्रदान करता है और संक्रमण से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बैगा तब तक स्तनपान जारी रखते हैं जब तक बच्चा दूध पीना चाहता है।

शोध उद्देश्य

बैगा जनजाति में स्वास्थ्य प्रति जागरूकता का मूल्यांकन।
बैगा जनजाति में स्वास्थ्य संबंधी समस्या का अध्ययन।

शोध की परिकल्पना

बैगा जनजाति में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आई है।
बैगा जनजाति स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिए कार्य कर रही है।

शोध का महत्व

शोध का महत्व है कि इस जनजाति के सदस्यों में स्वास्थ्य जागरूकता तथा उनकी समस्याओं को ज्ञात करके एवं आंकड़े संकलन करके एक रिपोर्ट तैयार कर की जाए और सरकार तक उनकी समस्याओं को पहुंचाया जाए ताकि सरकार द्वारा ऐसी योजनाएं बनाई जाए जिसमें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाई जा सके एवं उनके स्वास्थ्य स्तर को उच्च किया जा सके।

अध्ययन पद्धति

शोध अध्ययन का उद्देश्य बैगा जनजातियों में चिकित्सा की पद्धति के प्रति उनके दृष्टिकोण क्या है इसे जानने का प्रयास किया गया है और साथ ही उनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के कोटा विकासखंड के 30 गांव का अध्ययन किया गया है कोटा जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है जिसमें बैगा समुदाय की संख्या सर्वाधिक है इसलिए इस क्षेत्र का चुनाव किया गया है।

उपकरण प्रस्तुत अध्ययन के तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है और प्रतिशत विधि से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्याय हेतु बैगा जनजाति का चिकित्सा के प्रति दृष्टिकोण का वर्गीकरण किया गया है आंकड़े जो प्राप्त हुए उनका विवरण निम्न है

सारणी क्रमांक 1

स्वास्थ्य केंद्र की स्थिति

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
01	गांव में है	17	57
02	गांव में नहीं है	13	43
	योग	30	100

तालिका क्रमांक 1 मैं बैगा जनजाति के गांव में स्वास्थ्य केंद्र की उपलब्धता संबंधी जानकारी एकत्र की गई जिम 57 प्रतिशत बैगा ने यह बताया कि उनके गांव में स्वास्थ्य केंद्र है एवं 43 प्रतिशत बैगा ने बताया कि उनके गांव में स्वास्थ्य केंद्र की उपलब्धता नहीं है।

सारणी क्रमांक 2

नि:शुल्क दवा के विवरण की स्थिति

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
01	जानकारी है	14	47
02	जानकारी नहीं है	16	53
	योग	30	100

तालिका क्रमांक 2 से प्राप्त तथ्यों के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 47 प्रतिशत बैगा जनजातियों को इसकी जानकारी है जबकि 53 प्रतिशत बैगा जनजातियों को नि:शुल्क दवा वितरण की जानकारी नहीं है।

सारणी क्रमांक 3

चिकित्सा पद्धति का उपयोग

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
01	पारंपरिक चिकित्सा	18	60
02	आधुनिक चिकित्सा	12	40
	योग	30	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा पारंपरिक चिकित्सा पद्धति का उपयोग किया जाता है एवं 40 प्रतिशत उत्तरदाता द्वारा आधुनिक चिकित्सा का उपयोग किया जाता है इसे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान में भी यह जनजाति पिछड़ी हुई है और पारंपरिक चिकित्सा का उपयोग ज्यादा करती है।

सारणी क्रमांक 4

शासकीय चिकित्सा की योजना का लाभ

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
01	मिलता है	22	73
02	नहीं मिलता है	08	27
	योग	30	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 73 प्रतिशत उत्तरदाताओं को शासकीय योजनाओं का लाभ मिलता है एवं 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्होंने लाभ नहीं उठाया है ।

सारणी क्रमांक 5

झाड़ फूंक संबंधी

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत
01	हां	21	70
02	नहीं मिलता है	09	30
	योग	30	100

तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट होता है कि 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा अभी भी झाड़ फूंक पर विश्वास किया जाता है और 30: प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा झाड़ फूंक का प्रयोग किया जाता है कि वर्तमान में आधुनिक चिकित्सा

पद्धति का उपयोग किया जा रहा है किंतु सामान्य बीमारी होने पर वे झाड़ फूंक के ऊपर ही ज्यादा विश्वास करते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान में बैगा जनजाति के स्वास्थ्य स्थिति का अध्ययन करने से पता चला है कि उनके विचारों में परिवर्तन आया है अब यदि बीमार होते हैं तो सामान्य स्थिति होने पर तो गुनिया या देवार बैगा के पास ही जाते हैं यदि उनके स्वास्थ्य पर कोई सुधार नहीं होता है तो वह अस्पताल जाते हैं और डॉक्टर से परामर्श लेकर उपचार करवाते हैं क्योंकि अब यह लोग अन्य संस्कृति के संपर्क में आने के कारण जागरूक हो गए हैं और सभी चीजों को गंभीरता से लेते हैं महिलाएं भी अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो गई है और आसपास और घरों में साफ सफाई रखने लगी है पोषण के संबंध में हमने जानकारी एकत्रित की तो यह देखा कि वह पोषण से संबंधित भी सभी चीजों का ध्यान रखती है बच्चों और स्वयं के स्थान पर खान–पान पर ध्यान देती है।

सन्दर्भः सूची

1. स्टेटिस्टिकल प्रोफाइल ऑफ स्लेटेड ट्राइब्स , जन डिवीजनल मंत्रालय का प्रोटोटाइप विभाग , भारत सरकार , 2013, पृष्ठ 143
2. जैन , कल्पना , बैगा जनजाति द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले उपकरण , आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान , भोपाल , 2007, पृ0 9
3. एल्विन , वैरियर , द बैगा , जॉन मुर्रे अल्बेमर्ले स्ट्रीट , डब्ल्यू लंदन , 1939, पृष्ठ 1
4. फोर्सिथ , कैप्टन जे0 , द हाइलैंड ऑफ सेंट्रल इंडिया , चौपमैन एंड हॉल , 193, लंदन , 1872, पृष्ठ 23
5. रसेल , आर0 वी0 , हीरालाल , डी ट्राइब्स एंड कास्ट ऑफ सेंट्रल प्रोविसन ऑफ इंडिया , वॉलियम टू , लंदन , 1916, पृ0 77
6. शुबर्ट , डब्लू0एच0 , सुपरीटेंडेंट ऑफ सेंसेज ऑरेशान सेंट्रल प्रोविसन एंड बरार , नागपुर , 1931, पृ0 404
7. एल्विन , वैरियर , द बैगा , जॉन मुर्रे अल्बेमर्ले स्ट्रीट , डब्ल्यू लंदन , 1939, पृ0 1
8. रसेल , आर0वी0 , हीरालाल , डी ट्राइब्स एंड कास्ट ऑफ सेंट्रल प्रोविसन ऑफ इंडिया , वॉलियम टू , लंदन , 1916 , पृ0 79
9. शर्मा , टी0 डी0 , ष बैगा ष, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी गायत्री अकादमी , 2012, पृ0 22, 23
10. रसेल , आर0वी0 , हीरालाल , डी ट्राइब्स एंड कास्ट ऑफ सेंट्रल प्रोविसन ऑफ इंडिया , वाल्यम टू , लंदन , 1916, पृ0 78,79